B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – Pedagogy of History
Course – 7 (A) /Unit – 3(b)
Topic – व्याख्यान विधि (Lecture Method)
Lecture No. - 66

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

भूमिका
(Introduction)

व्याख्यान विधि शिक्षण की पुरातन एवं सर्वाधिक लोकप्रिय विधियों में से एक है। इसमें शिक्षक द्वारा प्रत्यक्षतः सूचना को संप्रेषित किया जाता है। सूचना देने के साथ-साथ शिक्षक इसके माध्यम से छात्रों को विषय के प्रति आकृष्ट करने , उन्हें प्रोत्साहित करने के अलावा सूचना के विविध स्रोतों को एकत्रित करने हेतु कर सकता है। यह एक अध्यापक केन्द्रित विधि है जिसमें मूलतः शिक्षक संप्रेषण का कार्य करते हैं एवं छात्र केवल एक स्रोता की भाँति सुनते हैं। अतः यह विधि मूलतः एक लोक संप्रेषण ही है।

व्याख्यान की योजना
(Planning of Lecture)

इस विधि के प्रयोग हेतु क्रमबद्ध योजना की आवश्यकता होती है। शिक्षक को व्याख्यान देने से पहले पाठ योजना का अवश्य निर्मित करनी करनी चाहिए। योजना का निर्माण करते समय अधिगम उद्देश्यों , सम्मिलित की जाने वाली विषय-वस्तु की मात्रा, प्रयोग में लाए जाने वाल माध्यम, प्रतिपुष्टि तंत्र, आदि का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। पहले से बनी योजना कक्षा में शिक्षक केआत्मविश्वास को प्रत्साहित करती है। वह पहले से जानता है कि कब क्या किया जाए और क्या नहीं। योजना बनाते समय शिक्षक व्याख्यान को अधिक रोचक बनाने हेतु हास - परिहास के अंतरालों की योजना बना सकता है।

व्याख्यान देना
(Delivery of Lecture)

व्याख्यान देने का कार्य निम्नलिखित तीन सोपानों या चरणों में संपन्न किया जाता है -

1. **प्रस्तावना (Introduction)** - इस सोपान को उत्साहवर्धन का चरण भी कहा जाता है। इस चरण में शिक्षक का मुख्य कार्य विद्यार्थियों से संबंबध स्थपित करना, उनमें रूचि एवं उत्साह का निर्माण करना तथा उन्हें अगले चरण के लिए अग्रसर करना होता है। इसके लिए शिक्षक पहले पढ़ाए गए प्रकरण तथा छात्रों के पूर्व के अनुभवों को नए प्रकरण का संबंधित करता है। इस कार्य हेतु शिक्षक श्यामपट्ट या किसी अन्य श्रव्य-दृश्य सामग्री का प्रयोग करता है।

2. **प्रस्तुतीकरण (Presentation)** - यह व्याख्यान का महत्वपूर्ण चरण होता है। यह शिक्षक एवं छात्रों के बीच सूचनाओं के आदान -प्रदान का चरण होता है। इस चरण में शिक्षक छात्रों के समक्ष अवधारणाओं एवं सिद्धांतों की व्याख्या करता है, तथ्यों को प्रस्तुत करता है , आंकड़ों को व्यवस्थित करता है , आकृतियों को उद्धृत करता है। आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक भाव -भंगिमा, मुद्रा आदि जैसे विभिन्न अशाब्दिक संप्रेषण तकनीकों को भी अपनाता है।

3. **संस्थापन (Consolidation)** - यह अंतिम चरण होता है। इस चरण में शिक्षक पुनरावृत्ति करता है, व्याख्यान के मुख्य शिक्षण बिन्दुओं को या तो मौखिक या श्यामपट्ट पर लिखकर या पावर -प्वाइंट स्लाइड का उपयोग करके सारांश प्रस्तुत करता है। शिक्षक विद्यार्थियों का व्याख्यान की समझ का मूल्यांकन हेतु सम्मिलित की गई विषय-वस्तु पर कुछ प्रश्न भी पूछता है। इससे उसे छात्रों की अधिगम कठिनाइयों का पता चलता है एवं इसी के अनुरूप वह अपने शिक्षण में सुधार करने का प्रयत्न करता है। शिक्षक विद्यार्थियों को कुछ प्रदत्त कार्य भी देता है एवं अगले व्याख्यान के विषय के बारे में सूचित करता है।

To be Continued...